कहानी

नन्हा दीपक और जादुई बीज

एक समय की बात है. एक छोटा सा सुंदर गाँव था, जहाँ चारों ओर हरे-भरे खेत, आम और नीम के पेड़, और चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देती थी. उसी गाँव में दीपक नाम का एक नन्हा बच्चा रहता था. दीपक बहुत मासूम था, लेकिन वह थोड़ा जल्दबाज़ भी था. उसे हर चीज़ जल्दी चाहिए होती थी—चाहे खेल में जीत हो या पढ़ाई में अच्छे अंक. दीपक रोज़ सुबह स्कूल जाता और दोपहर को घर लौट आता. रास्ते में एक बड़ा सा बगीचा पड़ता था, जहाँ माली काका रहते थे. माली काका बहुत समझदार और धैर्यवान इंसान थे. उनके बगीचे में तरह-तरह के फूल, फल और सब्ज़ियाँ उगती थीं. दीपक को वह बगीचा बहुत पसंद था. वह अक्सर सोचता, 'काश मैं भी इतना सुंदर बगीचा बना पाता.'

एक दिन माली काका ने दीपक को अपने पास बुलाया. उन्होंने दीपक के सिर पर हाथ फेरा और एक छोटा सा बीज उसकी हथेली पर रख दिया. माली काका बोले, 'दीपक, यह बीज बहुत खास है. अगर तुम इसकी सही देखभाल करोगे, तो यह तुम्हें बहुत कुछ सिखाएगा.' दीपक को लगा कि यह कोई जादुई बीज है. वह बहुत खुश हुआ और बीज लेकर घर आ गया. दीपक ने घर के आँगन में एक गमला रखा और उसमें मिट्टी भरकर बीज बो दिया. पहले दिन उसने बहुत मन लगाकर पानी डाला. वह हर थोड़ी देर में गमले को देखने जाता. उसे लगता था कि शायद बीज तुरंत पौधा बन जाएगा. लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

दूसरे दिन भी मिट्टी वैसी ही थी. तीसरे दिन भी कुछ नहीं बदला. दीपक उदास हो गया. उसने सोचा, 'इसमें तो कोई जादू नहीं है.' वह गमले को अनदेखा करने लगा. कभी-कभी पानी डाल देता, कभी भूल जाता. धीरे-धीरे उसका मन उस बीज से हट गया.

एक दिन तेज़ धूप पड़ी और मिट्टी पूरी तरह सूख गई. दीपक को थोड़ी चिंता हुई, लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया. उसी रात दीपक ने एक अजीब सपना देखा. उसने देखा कि गमले से एक नन्हा पौधा निकला है, जिसकी आँखें हैं और वह रो रहा है. पौधा बोला, 'दीपक, मुझे तुम्हारी ज़रूरत थी. तुमने हार मान ली.' दीपक डर के मारे उठ गया. उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था. उसे समझ आ गया कि उसने गलती की है. सुबह होते ही वह गमले के पास गया, मिट्टी को हाथ से छुआ और पानी डाला. उसने मन ही मन कहा, 'अब मैं हार नहीं मानूँगा.'

अब दीपक रोज़ नियम से गमले की देखभाल करने लगा. वह स्कूल से आते ही पहले पौधे को देखता. वह मिट्टी साफ करता, समय पर पानी देता और उसे धूप में रखता. कई दिन बीत गए, लेकिन फिर भी कुछ नहीं दिखा. इस बार दीपक ने खुद को समझाया, 'अच्छी चीज़ें धीरे-धीरे बनती हैं.'

लगभग दो हफ्तों बाद एक सुबह दीपक ने देखा कि मिट्टी से एक छोटी सी हरी नोक बाहर आई है. दीपक की खुशी का ठिकाना नहीं रहा. वह जोर से चिल्लाया, 'माँ! पौधा निकल आया!' उसकी माँ ने मुस्कराकर कहा, 'देखा बेटा, धैर्य रखने से सब अच्छा होता है.'

दिन बीतते गए. वह छोटा पौधा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा. उसकी पत्तियाँ हरी और चमकदार थीं. दीपक अब सिर्फ पौधे की ही नहीं, बल्कि अपनी हर जिम्मेदारी की देखभाल करने लगा. वह समय पर होमवर्क करता, खिलौने समेटता और बड़ों की बात सुनता.

एक दिन गाँव में घोषणा हुई कि बच्चों के लिए खेल और कला प्रतियोगिता होने वाली है. पहले दीपक ऐसे मौकों से डर जाता था. उसे लगता था कि वह हार जाएगा. लेकिन अब उसने ठान लिया था कि कोशिश ज़रूर करेगा. उसने चित्रकला में हिस्सा लिया और बहुत मेहनत से चित्र बनाया.

जब नतीजे आए, तो दीपक का नाम पहले स्थान पर लिया गया. पूरा गाँव ताली बजाने लगा. दीपक की आँखों में खुशी और गर्व के आँसू थे. वह समझ गया था कि मेहनत कभी बेकार नहीं जाती.

दीपक उस दिन माली काका के पास गया. माली काका ने मुस्कराकर कहा, 'दीपक, वह बीज साधारण था, लेकिन तुम्हारा मन बदल गया, इसलिए वह खास बन गया.' दीपक ने पौधे को देखा और सोचा कि यह पौधा नहीं, बल्कि उसकी सीख है. अब दीपक बड़ा होकर भी उस पौधे की देखभाल करता रहा. जब भी उसे कोई काम मुश्किल लगता, वह पौधे को देखकर याद करता कि धैर्य और मेहनत से सब संभव है.

सीख

जो बच्चे धैर्य रखते हैं, मेहनत करते हैं और हार नहीं मानते, वही जीवन में सफल होते हैं.

बिंदु मिलाओ

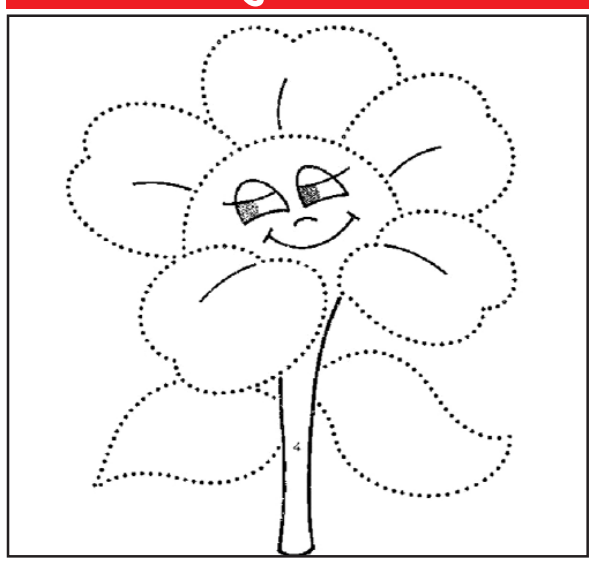

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

जय जवान जय किसान

लाल बहादुर शास्त्री, जिन्हें प्यार से 'शास्त्रीजी' कहा जाता था, भारत के इतिहास में एक प्रेरक नेता के रूप में याद किए जाते हैं. उनका जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था. शास्त्रीजी की सादगी, ईमानदारी और देशभक्ति ने उन्हें जनता के बीच बेहद लोकप्रिय बनाया. उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व दिखावे से नहीं, बल्कि कर्म और ईमानदारी से बनता है.

शास्त्रीजी ने स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित होकर भाग लिया. जेल की कठोर सज़ाओं और मुश्किल हालात में भी उन्होंने अपने सिद्धांत नहीं छोड़े. उनकी यह दृढ़ता और साहस ही उन्हें भारतीय राजनीति के महान नेताओं में गिनती दिलाती है. 1964 में लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने.

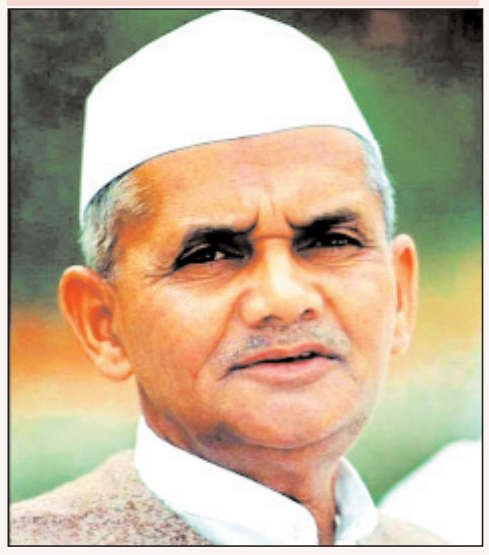

प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने देश की समस्याओं को समझने और उनका समाधान निकालने के लिए कई कदम उठाए. उनका सबसे प्रसिद्ध योगदान भारत-पाक युद्ध 1965 के समय आया.

इस युद्ध के दौरान उन्होंने देशवासियों को साहस और आत्मविश्वास दिया. उनकी मशहूर नारा 'जय जवान, जय किसान' आज भी युवाओं और देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है. इसका मतलब था कि सैनिकों की बहादुरी और किसानों की मेहनत दोनों ही देश की ताकत हैं. शास्त्रीजी ने किसानों की भलाई और खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए कई योजनाएं शुरू की. उन्होंने देश में हरित क्रांति की नींव रखी, जिससे भारत में अनाज की कमी कम हुई. वे हमेशा किसानों की समस्याओं को समझते और उन्हें हल करने की कोशिश करते. यही वजह थी कि आम लोग उन्हें बहुत पसंद करते थे. उनका जीवन हमें यह भी सिखाता है कि संकट के समय शांत और समझदार रहना बहुत जरूरी है. युद्ध या कठिन परिस्थिति में उन्होंने साहस के साथ-साथ बुद्धिमत्ता का भी परिचय दिया. उनका दृष्टिकोण आज भी नेताओं और युवाओं के लिए प्रेरक है.

निष्कर्ष में, लाल बहादुर शास्त्री ने अपने जीवन में सादगी, मेहनत और देशभक्ति से देश को आगे बढ़ाया. उनका उदाहरण हमें यह सिखाता है कि कठिनाइयों के बावजूद अगर हम ईमानदारी, धैर्य और कर्म से काम करें, तो सफलता अवश्य मिलती है. शास्त्रीजी की तरह हम भी अपने जीवन में छोटे-छोटे प्रयासों से बड़े बदलाव ला सकते हैं.

आइने के रोचक तथ्य

- आइने में जो हम देखते हैं, वह असल में उल्टा होता है, लेकिन ऊपर-नीचे नहीं.
- पुराने जमाने में सबसे पहला आइना सोने की पतली परत वाला बनाया गया था.
- आइना धूप में गर्म नहीं होता; यह केवल रोशनी को परावर्तित करता है.
- कुत्ते और बिल्ली जैसी कई जानवर अपने आइने में खुद को पहचान नहीं पाते.
- दुनिया का सबसे बड़ा आइना चीन में है, जो 32,000 वर्ग मीटर का है और वैज्ञानिक प्रयोगों में इस्तेमाल होता है.
- आइने में घड़ी देखने पर समय उल्टा नहीं होता; बस नंबरों का क्रम बदल जाता है.
- वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रह्मांड में कुछ जगहों पर 'मिरर यूनिवर्स' जैसा उल्टा प्रतिबिंब मौजूद हो सकता है.
- पुरानी मान्यताओं के अनुसार रात में आइने को ढक दिया जाता था क्योंकि लोग सोचते थे कि आत्मा इसमें फँस सकती है.
- आइना किसी चीज़ को नहीं खाता; यह केवल रोशनी को परावर्तित करता है.
- अगर आइने को झुकाकर रखें, तो प्रतिबिंब अलग दिशा में दिखाई दे सकता है.

भूल भुलैया

जानकारी

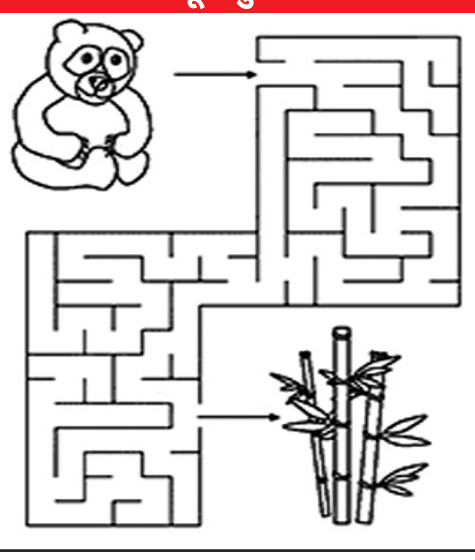

ग्लोबल वार्मिंग : हमारी धरती की परेशानी

ग्लोबल वार्मिंग का मतलब है कि हमारी धरती का तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है. यह सिर्फ गर्मी बढ़ने की बात नहीं है, बल्कि यह हमारी धरती और सभी जीव-जंतुओं के लिए एक बड़ी समस्या बन रही है.

ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण मानव गतिविधियाँ हैं. हम रोज़ाना कार, बस और ट्रक जैसी गाड़ियों का इस्तेमाल करते हैं. फैक्ट्रियों से धुआँ निकलता है और हम बहुत सारे फॉसिल ईंधन (जैसे कोयला, पेट्रोल, डीजल) जलाते हैं. इन सब चीज़ों से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में बढ़ जाती हैं. ये गैसें सूरज की गर्मी को धरती से बाहर जाने नहीं देतीं, जिससे धरती गर्म होती जाती है. ग्लोबल वार्मिंग से कई परेशानियाँ आती हैं. बर्फ के बड़े-बड़े ग्लेशियर पिघल रहे हैं. समुद्र का पानी बढ़ रहा है, जिससे तटीय इलाके डूबने का खतरा है. गर्मी बढ़ने और बारिश का पैटर्न बदलने से सूखा और बाढ़ जैसी आपदाएँ भी बढ़ रही हैं.

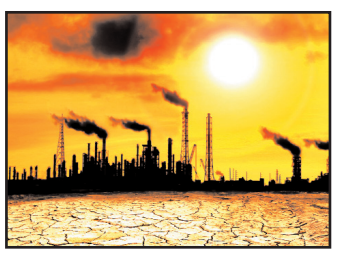

इसके अलावा, जानवरों और पक्षियों का रहना मुश्किल हो रहा है. किसान भी परेशान हैं क्योंकि फसलें सूख या बाढ़ में नष्ट हो जाती हैं. हमें ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए अभी से कदम उठाने होंगे. इसके लिए हम कुछ आसान बातें कर सकते हैं : पेड लगाएँ और वनों की रक्षा करें सरकार और लोग भी मिलकर ग्लोबल वार्मिंग रोकने की कोशिश कर रहे हैं. जैसे पेरिस समझौता में सभी देशों ने तय किया कि वे धरती को ज्यादा गर्म होने से बचाएंगे. लेकिन अकेले सरकार नहीं, हम सबकी भी ज़िम्मेदारी है. ग्लोबल वार्मिंग रोकना हम सभी का काम है. अगर हम अब ध्यान नहीं देंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती पर जीवन मुश्किल हो जाएगा. छोटे-छोटे कदम जैसे पेड़ लगाना, बिजली बचाना और गाड़ियों कम चलाना बहुत मदद कर सकते हैं. हमें अपनी धरती को बचाना है, क्योंकि यह सिर्फ हमारा घर नहीं, बल्कि सभी जीवों का घर है.

कविता

हरा-भरा जीवन

हरे-भरे पेड़ हमारे साथी,
छाँव में बिठाएँ सुकून की बाती.

फूलों में रंग और खुशबू भरी,
हर पत्ती में जीवन की कहानी सही.

पंछी गाएँ गीत ताजगी भरे,
सारे जग को हरा-भरा करें सरे.

पेड़ लगाएँ हम, धरती बचाएँ,
प्रकृति के साथ मिलकर खुशियाँ मनाएँ.

बूझो तो जानें

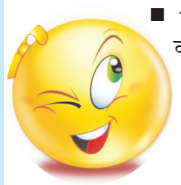

- 1. ऊँचा उड़ता हूँ, पंख नहीं. मैं कौन?
  उत्तर: हवा
- दिन में छिपता हूँ, रात में चमकता हूँ. मैं कौन?
  उत्तर: चाँद
- बिना पाँव के चलता हूँ. मैं कौन?
  उत्तर: पानी
- सफ़ेद और ठंडा, गिरता है आसमान से. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: बर्फ
- हरा, खाया जाता है. मैं कौन?
  उत्तर: खीरा
- रात में गाता हूँ, सबको डराता हूँ. मैं कौन?
  उत्तर: उल्लू
- बिना दरवाज़े का घर, अंदर बच्चा रहता है. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: अंडा
- सबको रोशन करता हूँ, दिन में चमकता हूँ. मैं कौन?
  उत्तर: सूरज

हंसी-ठिठोली

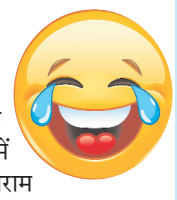

- पप्पू - 'मम्मी, आज स्कूल नहीं जाना.'
  मम्मी - 'क्यों?'
  पप्पू - 'कल मेरी दोस्त ने कहा कि मैं पढ़ाई में सुपर हूँ, आज आराम करूँ!'
- राजू - 'अरे, तुम्हारे जूते इतने चमकदार क्यों हैं?'
  मोनू - 'क्योंकि रोज़ मैं उन्हें टॉर्च से पोलिश करता हूँ!'
- टीचर - 'बताओ, समुद्र में सबसे ज्यादा क्या है?'
  बच्चा - 'पानी और मछली, सर.'
  टीचर - 'और?'
  बच्चा - 'सैल्फी क्लिक करने वाले लोग!'
- बबलू - 'मम्मी, मैं स्कूल नहीं जा सकता.'
  मम्मी - 'क्यों?'
  बबलू - 'कल की होमवर्क की वजह से मेरा दिमाग अब फ्री नहीं है!'

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 11. आसमान से बादल गायब, 2. लड़के के जूते का फीता, 3. सबसे बड़े पेड़ का तना, 4. बच्चे के दांत, 5. बच्चे की टी शर्ट की पीली धारी